डॉ. रूख़साना महामूदमियाँ शेख
एम्.ए., पीएच्.डी.
अध्यक्षा, हिंदी विभाग,
दहिवडी कॉलेज, दहिवडी,
जि. सातारा (महाराष्ट्र)
सदस्या, हिंदी अध्ययन मंडल
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर.

प्रमाणपत्र

मैं प्रमाणित करती हूँ कि कु. **मोनिका राजाराम कदम** ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्. फिल्. (हिंदी) उपाधि के लिए '**जयशंकर प्रसाद के उपन्यासों में नारी जीवन**' शीर्षक से प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध मेरे निर्देशन में सफलता पूर्वक पूरे परिश्रम के साथ संपन्न किया है। इसमें शोध छात्रा ने मेरे सुझावों का पूर्णतः पालन किया है। जो तथ्य लघु शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। शोध छात्रा के कार्य से मैं पूर्णतः संतुष्ट हूँ। अतः इसे परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए। यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या किसी अन्य विश्वविद्यालय में एम्. फिल्. उपाधि हेतु प्रस्तुत नहीं की गई है।

स्थान : सातारा.

तिथि : 13 जनवरी, 2009.

शोध निर्देशिका

(डॉ. रूख़साना महामूदमियाँ शेख)

हिंदी विभाग प्रमुख
डॉ.सौ.आर.एम.शेख (आर.आर.मुल्ला)
दहिवडी कॉलेज, दहिवडी
सदस्या, शिवाजी अध्ययन मंडल
शिवाजी विद्यापीठ, को[illegible]

अनुशंसा

हम अनुशंसा करते है कि **कु. मोनिका राजाराम कदम** का एम्. फिल. (हिंदी) का लघु शोध-प्रबंध, '**जयशंकर प्रसाद के उपन्यासों में नारी जीवन**' परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

डॉ. बी. डी. सगरे
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा.

DR. B. D. SAGARE
M.A., M.Phil., Ph.D.

LAL BAHADUR SHASTRI COLLEGE
SATARA

डॉ. सुहास साळुंखे
प्राचार्य,
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा.

स्थान : सातारा.

तिथि : 13 जनवरी, 2009.

प्रख्यापन

मैं प्रख्यापित करती हूँ कि '**जयशंकर प्रसाद के उपन्यासों में नारी जीवन**'' यह लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्. फिल्. (हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय में एम्. फिल्. उपाधि हेतु प्रस्तुत नहीं की गई है।

स्थान : सातारा.

तिथि : 13 **जनवरी**, 2009.

शोध छात्रा

MRKadam

(कु. मोनिका राजाराम कदम)

प्राक्कथन

मानव पर धर्म और समाज का गहरा प्रभाव होता है। मानव का समाज के साथ जटिल सम्बन्ध होता है। मानव का संपूर्ण जीवन प्रकृति, कला और इतिहास से जुड़ा हुआ होता है। मानव का व्यक्तित्व विकास परम्परा के साथ अभिन्न रूप से जूड़ा रहता है। साहित्य के माध्यम से मानव के इस विकास को सहज देखा जा सकता है। साहित्य में मानव-जीवन की झाँकी नजर आती है। मनुष्य ने अपने मनोरंजन, ज्ञान-साधना एवं आत्मालाप के लिए साहित्य की निर्मिति की है। इस प्रकार मनुष्य और साहित्य इन दोनों का स्नेहवत रिश्ता है।

भारतीय-साहित्य में हिन्दी-साहित्य अपना विशेष स्थान रखता है। साहित्यकारों ने अपने साहित्य में मानव-समाज का यथार्थ चित्रण किया है। साहित्यकार समाज और संस्कृति को आपस में जोड़ने का महान कार्य करता हैं। साहित्यकार अपने साहित्य लेखन से समाज तथा देश की सेवा करना अपना परम कर्तव्य समझा हैं। साधारणतः साहित्य निर्मिति का मुख्य केन्द्र 'स्त्री-पुरुष' एवं उनके इर्द-गिर्द घटित होती घटनाएँ है। हिंदी साहित्य में नर-नारी के संकीर्ण संबंधों का सफलता से चित्रण हुआ है।

आधुनिक हिन्दी-साहित्य में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात अनेक महत्त्वपूर्ण बदलाव हुए है। भारतीय समाज एवं साहित्य पर पाश्चात्य विचार एवं सभ्यता का गहरा प्रभाव पड़ा। जिससे मनुष्य के जीवन-मूल्यों में तेजी से परिवर्तन आए। साहित्य में विभिन्न शैलियों के प्रयोग किए जाने लगे, नई प्रवृत्तियों का भी उदय हुआ। साहित्य में विभिन्न विषयों पर लेखन कार्य किया जाने लगा। आधुनिक साहित्य में 'नारी-विमर्श' प्रभावी रूप से अवतरित हुआ। आज भी अनेक साहित्यकार अपने साहित्य में 'नारी-विषय' को बहुआयामी स्वरूप प्रदान कर रहे है।

हिन्दी-साहित्य में अनेक साहित्यकारों ने 'नारी' को केन्द्र में रखकर साहित्य निर्मिति की है। इस साहित्य के माध्यम से 'नारी जीवन' पर प्रकाश डाला गया है। प्रेमचन्द, प्रसाद, अमृतलाल नागर, यशपाल, जैनेन्द्र, अज्ञेय, राजेन्द्र यादव आदि अनेक साहित्यकारों ने 'नारी' इस विषय पर नए दृष्टिकोण से विचार किया है; साथ ही महादेवी वर्मा, सुभद्राकुमारी चौहान, शिवानी, कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, शशिप्रभा शास्त्री, मृदुला गर्ग तथा मैत्रेयी पुष्पा आदि अनेक महिला साहित्यकारों ने नारी जीवन को एक नई चेतना, एक नया दृष्टिकोण प्रदान किया है। इन साहित्यकारों ने 'नारी-आवाज' को समाज तक पहुँचाया और

'नारी-आंदोलन' में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

हिन्दी उपन्यास-साहित्य में नारी के सर्वांगीण पक्ष के दर्शन होते है। हिन्दी उपन्यासकारों ने नारी जीवन को यथार्थ रूप से प्रस्तुत किया है। आधुनिक नारी अपनी अस्मिता को तलाश रही है। वह परम्परा और आधुनिकता के दोहरे मापदंड में पिसती जा रही है; जिससे वह भारतीय संस्कार एवं संस्कृति से बिछड़ती जा रही है। यह नारी अपने स्वतंत्र वजूद की खोज में निकल पड़ी है। आधुनिक नारी की इस विस्तृत पृष्ठभूमि को लेकर अनेक उपन्यासों की रचना हुई है। इन उपन्यासों में नारी समस्याएँ, नारी-जागरण, नारी-स्वतंत्रता के विविध पक्षों पर विचार किया गया है।

मैंने अपने नारी-स्वभाव के कुतुहल को बरकरार रखते हुए अपने अध्ययन के लिए 'नारी जीवन' का ही चुनाव किया। 'जयशंकर प्रसाद' के उल्लेखमात्र से हिन्दी-साहित्य गर्वान्वित होता है। मैं खुद को बड़ी भाग्यशाली समझती हूँ क्योंकि महान साहित्यकार जयशंकर प्रसाद के उपन्यासों में प्रयुक्त नारी जीवन का अध्ययन करने का अवसर मुझे प्राप्त हुआ है। प्रसाद का नारी जीवन की ओर देखने का एक अपना ही नजरिया था। इनके उपन्यासों में 'नारी-पात्र' बहुत ही प्रभावी रूप में चित्रित हुए है। प्रसाद ने अपने उपन्यास में नारी जीवन के विविध-रंगी छटाओं को बड़ी सूक्ष्मता एवं कुशलता के साथ प्रस्तुत किया है। प्रसाद के उपन्यास में नारी के विभिन्न पहलुओं के दर्शन होते है।

मैंने इस अध्ययन के द्वारा प्रसाद के उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन को संपूर्ण रूप से प्रस्तुत करने की कोशिश की है। इसके लिए अनेक विद्वानों के प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक के नारी विषयक विचारों का आश्रय लिया है। मैंने इस अनुसंधान को पूरी इमानदारी एवं परिश्रम से प्रस्तुत किया है। इस संदर्भ में मैंने निष्कर्ष रूप से जो प्रतिपादन किया है, वह आधुनिक नारी के मूल्यविहीन, आत्मकेन्द्रीत और चंचल व्यक्तित्व में परम्परागत भारतीय नारी-मूल्यों की खोज करने; उसकी गरिमा को बनाए रखने एवं दिशा प्रदान करने में जरूर सहायक रहेगा, यह मेरा विश्वास है।

विषय का महत्त्व

1] 'नारी-जीवन' के अध्ययन द्वारा नारी में छिपे असामान्य गुणों की खोज करना और उसे बाहर निकालकर समाज के सामने आदर्शरूप में प्रस्तुत करने के लिए -

2] आज की नारी संत्रास में फँसी हुई, कुण्ठाओं से घिरी हुई है। उसको योग्य मार्गदर्शन एवं दिशा निर्देशन के लिए -

3] प्राचीन वैदिक काल में नारी की 'देवी' रूप में पूजा होती थी; तब से लेकर आज तक लगातार नारी

पतन की ओर बढ़ रही है; इन पतन के कारणों को ढूँढ़ने के लिए -

4] आधुनिक काल में मनुष्य के मूल्यों में तेजी से परिवर्तन हो रहा है। मनुष्य की जीवन शैली, उसके व्यवहार, आचार-विचारों में अमूलाग्र बदलाव आ रहा है। नारी भी इस बदलाव से अछूती नहीं रह पाई है। आज की नारी स्वच्छंद विहार करना चाहती है। नारी जीवन में आधुनिकता के प्रवेश से उसके पारंपारिक मूल्य खो से गए है। इन्हीं नारी-मूल्यों को पुनःजागृत करने के लिए -

5] प्रसाद आदर्शवाद के समर्थक थे। उनके साहित्य में चित्रित नारियाँ 'सच्चे भारतीय नारी' का प्रतिनिधित्व करती है। इन नारी पात्रों को नजदीकता से परखकर प्रसाद कालीन नारी जीवन का जायजा लेने के लिए -

6] भारतीय नारी संस्कार एवं संस्कृति की साक्षात् मूरत होती है। यह नारी अपने जीवन के हर पड़ाव में अपने नीति-मूल्यों को बनाए रखती है और इसी में ही वह अपने नारित्त्व का सम्मान समझती हैं। प्रसाद के उपन्यास में चित्रित नारी जीवन में नारी के इन्हीं गुणों को प्रस्तुत करने के लिए यह विषय महत्त्वपूर्ण योगदान देता है।

शोध प्रबंध का उद्देश्य

नारी हमेशा से ही साहित्य निर्माण का केन्द्र रही है। नारी समाज के हर हिस्से से गहराई से जुड़ी हुई होती है। इसके कारण नारी का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से घर-परिवार तथा समाज के साथ पुराना रिश्ता होता है। इन सारे रिश्तों को निभाते-निभाते नारी को अनेक कठिनाईयों से गुजरना पड़ता है। नारी इस क्रिया में अंतर्बाह्य रूप से जुड़ी हुई होती है। इस कारण नारी का बहुरंगी-बहुढ़ंगी व्यक्तित्व साहित्यकारों को अपनी ओर आकर्षित करता रहा है। विश्वभर में ज्यादा से ज्यादा साहित्य 'नारी' के इर्द-गिर्द ही रचा गया है।

हिन्दी साहित्य में भी 'नारी जीवन' को केन्द्र में रखकर विस्तृत साहित्य निर्माण हुआ है। साहित्यकारों ने नारी के हर रूप को रोचक ढंग से पाठकों तक पहुँचाने की कोशिश की है। हिन्दी उपन्यास-साहित्य में भी 'नारी चित्रण' को संपूर्णता से उतारने की कोशिश की गई है। अनेक उपन्यासकारों ने नारी के विभिन्न रूपों के दर्शन कराए है। उन्होने नारी के हर पक्ष को इमानदारी से प्रस्तुत किया है।

हिन्दी उपन्यास में परिवार, समाज तथा देश में नर-नारी के आपस में बनते-बिगड़ते रिश्तों को, नारी की सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक स्थिति आदि अनेक विषयों को चित्रित किया गया है। तथा इन उपन्यासों में नारी के हर रूप माता, पत्नी, पुत्री, बहन, ननद, सास, प्रेमिका, विधवा, वेश्या आदि को

भी महत्त्वपूर्ण स्थान मिला है।

नारी के बाह्य जगत् के साथ-साथ उसके अंतर्जगत को भी साहित्य निर्माण का केन्द्र बनाया गया है। नारी मन की हर स्थिति, उसके जीवन में आने वाले उतार-चढ़ाव, उसके कारण उसके व्यक्तित्व में होने वाले बदलाओं को साहित्य में यथार्थ रूप में चित्रित किया गया है। नारी अपने जीवन में अनेक समस्याओं से घिरी हुई होती है। यह समस्याएँ आमतौर पर घर, परिवार तथा समाज से जुड़ी हुई होती है। नारी को व्यक्तिगत रूप में अनेक समस्याओं का मुकाबला करना पड़ता है। नारी के आदर्श रूप के साथ ही नारी के उपेक्षित, शोषित रूप को भी महत्त्व दिया गया है। नारी के इन सभी रूपों का विश्लेषण हिंदी उपन्यासों में सहज रूप से दिखाई देता है। तात्पर्य नारी आदिकाल से लेकर आज तक प्रश्नों के घेरे में फँसी है, अपना जवाब ढूँढ़ रही है, अपने अस्तित्व की खोज में भटक रही है। अतः उपन्यासकारों ने समाज को इन सवालों के जवाब खोजने पर मजबूर किया और अपने उपन्यासों द्वारा 'नारी जीवन' पर प्रकाश डाला है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध इन्ही सवालों के जवाब खोजने का एक प्रयास है। प्रसाद के 'कंकाल', 'तितली' एवं 'इरावती' उपन्यास में प्रसाद ने नारी-जीवन की स्थिति, नारी जीवन की अनेक समस्याओं, नारी के विविध रूपों तथा नारी की चरित्रगत विशेषताओं पर प्रकाश डाला है।

स्पष्ट है कि, प्रसाद के उपन्यासों में 'नारी-जीवन' को प्रमुखता मिली है। फिर भी अब तक उनके उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन पर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान नहीं हुआ है। अतः मैंने **''जयशंकर प्रसाद के उपन्यासों में नारी जीवन''** को अपने शोध का विषय बनाकर उसे न्याय देने का प्रयास किया है।

✷ प्रस्तुत विषय का अध्ययन करते समय मेरे सामने कई सवाल प्रस्तुत हुए -

1. भारतीय समाज में नारी का क्या स्थान है ?
2. साहित्य में चित्रित नारी के विभिन्न रूप कौन से हैं ?
3. प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक की नारी की स्थिति में कौन-कौन से बदलाव हुए हैं ?
4. नारी के कौन से पक्षों पर हिन्दी साहित्य में लेखन का कार्य हुआ है ?
5. साहित्यकार प्रसाद का नारी-विषयक दृष्टिकोन क्या है ?
6. प्रसाद ने अपने उपन्यासों में नारी पक्ष को किस तरह से शब्दबद्ध किया है ?
7. क्या प्रसाद ने अपने उपन्यासों में नारी का अन्तर्बाह्य चित्रण किया है ?
8. क्या प्रसाद के नारी पात्र महानता की चोटि तक पहुँचे है ?
9. प्रसाद के उपन्यासों में नारी का सामान्या से लेकर लोकसेविका तक के रूपों को किस तरह अंकित

किया है ?

10. प्रसाद के उपन्यासों में नारी जीवन की महत्त्वपूर्ण विशेषता कौन सी दिखाई देती है ?

11. प्रसाद के उपन्यासों में नारी का आदर्श रूप किस तरह चित्रित हुआ है ?

आदि प्रश्नों के उत्तर खोजने का प्रयास किया गया है तथा उन्हें विनम्रतापूर्वक प्रस्तुत करने की कोशिश की है।

✷ शोध विषय का स्वरूप और व्याप्ति

इस लघु शोध-प्रबंध को अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से इसे निम्नांकित अध्यायों में विभाजित किया है -

✷ प्रथम अध्याय - 'भारतीय साहित्य में नारी'

यह अध्याय भारतीय साहित्य का परिचय देने की दृष्टि से लिखा गया है। इसमें प्राचीन साहित्य, मध्ययुगीन साहित्य तथा आधुनिक साहित्य का संक्षिप्त रूप एवं उनमें उल्लिखित नारी-जीवन की झाँकियों को दर्शाया गया है। अध्ययन का विषय 'नारी' होने के कारण उसके नैसर्गिक रूप का विश्लेषण किया गया है। नारी नर के साथ जुड़ी होने के कारण इन दोनों के व्यक्तित्व विकास की अंवधारणा को प्रस्तुत किया गया है। अतः भारतीय साहित्य में नारी-रूपों की विस्तृत चर्चा की गई है और अंत में निष्कर्ष को प्रस्तुत किया गया है।

✷ द्वितीय अध्याय - 'हिन्दी उपन्यासों में नारी'

इसके अंतर्गत हिन्दी उपन्यास की विकास यात्रा के विभिन्न पड़ावों को प्रस्तुत किया है। हिन्दी उपन्यास साहित्य को तीन विभागों में विभाजित किया गया है - प्रेमचंदपूर्व उपन्यास, प्रेमचंदयुगीन उपन्यास और प्रेमचन्दोत्तर उपन्यास। इस विभाजन के अंतर्गत उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन को प्रस्तुत किया गया है। हिन्दी उपन्यासों में नारी-चित्रण के प्रमुख पक्षों का विवेचन किया गया है। अंत में निष्कर्ष दिया गया है।

✷ तृतीय अध्याय - 'जयशंकर प्रसाद : व्यक्तित्व-कृतित्व'

साहित्य पर साहित्यकार के विचार, जीवन शैली तथा बाह्य परिवेश का विशेष प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। साहित्यकार के व्यक्तित्व की झलक उसके साहित्य में सहज दिखाई देती है। अतः साहित्यकार का साहित्य पूर्णतः से जानने के लिए उसके व्यक्तित्व को देखना अत्यंत आवश्यक होता है।

इस अध्याय में जयशंकर प्रसाद के व्यक्तित्व के अंतर्गत जीवन-परिचय, जन्म-वंश परंपरा, बाल्यकाल, शिक्षा-दीक्षा, विवाह और सन्तति, साहित्यिक जीवन, प्रारंभ और उत्कर्ष तथा अंतिम समय आदि का विवेचन-विश्लेषण किया गया है।

प्रसाद के कृतित्व का भी संक्षिप्त में परिचय दिया गया है। प्रसाद मूलतः कवि है। फिर भी एक सफल गद्यकार के रूप में प्रस्थापित है। अतः उनके दोनों पहलुओं का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। अंत में निष्कर्ष निकाला गया है।

✷ चतुर्थ अध्याय - 'प्रसाद के उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय'

प्रस्तुत अध्याय में प्रसाद के उपन्यासों का कथा परिचय देते हुए कथागत विशेषताओं का उद्‌घाटन किया गया है। 'कंकाल', 'तितली' तथा 'इरावती' की कथावस्तु का परिचय करवाते समय नारी पात्रों का सूक्ष्म विश्लेषण किया है।

✷ पंचम् अध्याय - 'प्रसाद के उपन्यासों में नारी पात्र-वर्गीकरण'

इस अध्याय में प्रसाद के औपन्यासिक नारी-पात्रों का विभिन्न रूपों में विभाजन किया गया है। इसके अन्तर्गत पात्रों का कथा की दृष्टि से प्रमुख तथा गौण नारी पात्रों का विश्लेषण किया गया है। सामाजिक स्थिति की दृष्टि से नारी पात्रों के विभाजन में नारी के पत्नी, प्रेमिका, माता, विधवा, वेश्या तथा अन्य रूपों में विभाजन किया गया है। वैचारिक दृष्टि से नारी पात्रों के वर्गीकरण के अन्तर्गत परम्परागत एवं विद्रोही नारी रूप विश्लेषित किया गया है। साथ ही मनोवैज्ञानिकता की दृष्टि से नारी पात्रों के विभाजन के अंतर्गत सामान्य नारी पात्र तथा असामान्य नारी पात्रों को प्रस्तुत किया गया है। अंत में निष्कर्ष को दिया गया है।

✷ षष्ठ अध्याय - 'जयशंकर प्रसाद के उपन्यासों में नारी पात्रों का अंतः बाह्य चित्रण'

इस अध्याय के अंतर्गत नारी के सर्वांग पक्ष का विवेचन किया गया है। इस अध्याय के अंतर्गत नारी के अंतरंग तथा बाह्य स्वरूप को प्रस्तुत किया गया है। इसमें नारी के अंतरंग चित्रण के अंतर्गत उसका अन्तर्द्वन्द्व, अहम् भाव तथा उदात्तीकरण आदि मनोवैज्ञानिक रूप को विश्लेषित किया गया है। नारी के बहिरंग विभाजन के अंतर्गत पात्र-परिचय, वेश भूषा तथा क्रिया प्रतिक्रिया को प्रस्तुत किया गया है। साथ ही नारी-पात्रों को स्पष्ट करने के लिए नाटकीय चित्रण प्रस्तुत किया गया है। अंत में निष्कर्ष को दिया गया है।

✷ उपसंहार

अंततः सभी अध्यायों में किए गए विश्लेषण द्वारा प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर निश्चित विचार व्यक्त करते हुए नारी समस्या तथा नारी जागृति के विविध रूपों का उद्घाटन किया गया है। प्रसाद के उपन्यासों में नारी पात्र की महत्ता, स्थिति तथा यथार्थ की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है। तत्पश्चात् अंत में आधार ग्रंथ सूची तथा संदर्भ ग्रंथ सूची को रखा गया है।

✷ प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की मौलिकता

1. 'जयशंकर प्रसाद के उपन्यासों में नारी-जीवन इस विषय पर किया गया अनुसंधान पूर्णतः मौलिक है क्योंकि मेरी अल्पमति के अनुसार यह विषय अछूता ही था।
2. जयशंकर प्रसाद कवि रूप में ख्यात है ही। उपन्यासकार के रूप में उनका विश्लेषण अपने आप में मौलिकता का बोध कराता है।
3. प्रसाद कथा साहित्य में अभिव्यक्त हुए नारी पात्रों ने तत्कालीन जीवन-मूल्यों को, आदर्शों को, यथार्थ को बखूबी प्रस्तुत किया है।
4. नारी जीवन की सूक्ष्म अभिव्यक्ति का विश्लेषण किया गया है। प्रसाद ने सामान्य ग्राम्यबाला से उच्चवर्गीय नारी के जीवन की समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है।
5. नारी का अबला रूप किस तरह उसे शापित करता हैं पथभ्रष्ट करता है इसका विश्लेषण यथार्थरूप में हुआ है। इन सब विशेषताओं का, नारी जीवन के विविध रूपों का वर्णन विश्लेषण ही इस लघु शोध प्रबंध की मौलिकता है।

ऋणनिर्देश

'नारी विमर्श' आज के आधुनिक युग की माँग है। मेरा यह शोध ग्रंथ इस आंदोलन में 'नारी जीवन' को गहराई से समझने की एक कोशिश मात्र है। हर नारी इस आंदोलन में कुछ ना कुछ करने के लिए छटपटा रही है। मैं अपने 'नारी जीवन' की सार्थकता को समझती हूँ और 'नारी विमर्श' की इस विचारधारा में कुछ योगदान देने का अवसर खोज रही हूँ। यह अवसर मुझे जयशंकर प्रसाद जैसे महान साहित्यकार के उपन्यास साहित्य पर शोध करने से प्राप्त हुआ। उनके उपन्यासों के नारी-पात्र एक ओर गुलाब पँखुडी के समान कोमल है तो दूसरी ओर वज्र के समान कठोर भी है।

मेरे शोध प्रबंन्ध की दिशा-निर्देशिका डॉ. रूख़साना महामूदमियाँ शेख जी की मैं चिरऋणी हूँ। इन्हीं के प्रेमपूर्ण मार्गदर्शन में मुझे 'प्रसाद के उपन्यास में नारी जीवन' के अध्ययन लाभ प्राप्त हुआ। वह केवल मेरी मार्गदर्शिका ही नहीं बल्कि पूरे शोध के दौरान मेरी अंतरंग गुरूमाता बनी रही। उन्होंने मेरे जीवन के कठीनतम क्षणों में मुझे डटे रहने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने तथा उनके पूरे परिवार ने मेरा बेटी की तरह खयाल रखा। वाक़ई इस शोध के दौरान मैंने डॉ. शेख मॅडम के रूप में 'महागुरू' की प्राप्ति की है, जिसे मैं अपना सौभाग्य मानती हूँ। अतः शेख मॅडम जी की मैं शतशः ऋणी हूँ।

मेरे शोध के दौरान मेरे परिवार ने मुझे हर क्षण प्रोत्साहित किया। इसमें मेरे पिताजी श्री राजाराम कदम एवं माताजी सौ. स्वयंप्रभा कदम के चरणों में मैं अपना शीश नमित करती हूँ। मेरे भाई श्री. धैर्यशिल कदम ने मुझे शोध के लिए सदा प्रेरित किया है। मेरी बहन सौ. मयुरिका और जीजाजी डॉ. श्री. रणजित पवार के स्नेहवत मार्गदर्शन की मैं ऋणी हूँ।

मेरे शोध-प्रबन्ध को पूर्ति दिलाने में मेरे सहयोगी रहे ''स्नेहांकित'', कु. मनिषा भोसले, श्री. संतोष साळुंखे, श्री. शरद पवार एवं श्री. मालोजी जगताप के प्रति मैं उपकृत हूँ। साथ ही मुझे सदा प्रेरणा एवं उत्तेजना देने वाले मेरे सभी 'स्नेहगणों' का मैं अपनी ओर से आभार प्रकट करती हूँ। साथ ही इस संशोधन काल में मेरे

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

सहयोगी रहे श्री. चवरे, श्री. बनसोडे, कु. जाधव, श्रीमती कांबळे, श्रीमती चव्हाण आदि सहकारीयों का मैं आभार प्रकट करती हूँ।

मेरे संशोधन में मुझे अनेक लोगों का मार्गदर्शन मिला, उनमें शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के हिंदी विभाग की प्रधान अध्यक्षा, डॉ. पद्मा पाटील मॅडम, मेरे संशोधन को बढ़ावा देनेवाली मेरी आदरणीय गुरूवर्या डॉ. छाया पाटील, स्नेहपूर्ण मार्गदर्शन करनेवाले एल.बी.एस. कॉलेज, सातारा के एम.फिल्. विभाग प्रमुख, श्री. बी. डी. सगरे तथा मेरे गुरू श्री. दिलीप भोसले जिन्होंने हमेशा से ही कुछ कर दिखाने की मेरी जिजिवीशा को सदा प्रज्वलीत रखा, इन सभी विद्वानों के प्रति मैं अपना आभार प्रकट करती हूँ।

प्रबंध लेखन का कार्य करते समय अनेक विद्वानों, लेखकों के मौलिक विचारों ने मुझे प्रभावित किया अतः उनके प्रति मैं कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ। इस शोध-प्रबन्ध का लेखन करते समय संदर्भ ग्रंथों के लिए मुझे अनेक ग्रंथालयों की सहायता लेनी पड़ी है। उनकी सहयता के बिन मैं यह प्रबंध निश्चित रूप से पूर्णता तक नहीं पहुँचपाता। मैं शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर; एल. बी. एस्. कॉलेज, सातारा; दहिवडी कॉलेज, दहिवडी के ग्रंथपालों तथा कर्मचारियों की आभारी हूँ।

मेरे इस शोध प्रबंध की पूर्ति में अपने टंकलेखन से जादू बिखेरने वाले श्री. विनायक पाटील जी की मैं सदा ऋणी रहूँगी। उन्होंने इस शोध प्रबंध को तैयार करने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

इसके सिवा जिन विद्वानों, साहित्यकारों, शुभचिंतकों एवं मित्रों ने प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से प्रेरणा, सहयोग, परामर्श, सुझाव एवं आशीर्वाद देकर अनुग्रहीत किया उन सबके प्रति मैं हृदय से कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

स्थान - सातारा

तिथि - 13 जनवरी, 2009.

अनुसंधानकर्ती

कु. मोनिका राजाराम कदम

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR